"ख़ुदा तुम लोगों की ज़िन्दगी आसान करना चाहता है।"

(सूर–ए–निसा)

इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद

हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

(पिछले शुमारे से आगे)

पच्छिम का घरेलू सिस्टम

यूरोप और अमरीका में घराने का जो सिस्टम है वह निराधार (बे बुनियाद) है। इस सिस्टम की नक़्ल करना ठीक नहीं है बल्कि इसमें ही मरन है। वहाँ वाले किसी पाक मक़सद से शादी नहीं करते बल्कि सेक्स के लिए शादी रचाते हैं। वहाँ नेक मर्द औरत बहुत कम हैं। यही वजह है कि यूरोप और अमरीका में जंगल की आग की तरह ख़राबियाँ फैल रही हैं। पश्चिम के ज़्यादातर मर्द औरत बुराई और विनाश का ज़माना बिताकर शादी करते हैं और अपने बच्चों को क्रेश में डाल देते हैं। कई साल बाद बच्चे को ले आते हैं। वह बच्चा बाप की चाहत और माँ के प्यार से अन्जान रह जाता है। उस पर भी माँ–बाप उसे बुराई के ठिकानों पर ले जाते हैं। फिर वही उसे स्कूल में Admit कराते हैं ताकि दिखावे की शिक्षा हो सके। अठ्ठारह साल की उम्र में उसे अपने से अलग कर देते हैं और समाज के तरस खाने को छोड़ देते हैं।

ये लोग अगर अपने बच्चों को घर और स्कूल में शराफ़त, शिष्टाचार, Economics और आचरण का पाठ पढ़ायें तो मुश्किल ही हल हो जाएगी मगर वे आत्मा और आध्यात्मक नहीं देखते। जब ये राज और समाज बनाते हैं तो समाज बुराई की जड़ और राज धरती पर बसने वाले कमज़ोरों, दलितों का ख़ून चूसते हैं। पच्छिम की युनिवर्सिटियों और स्कूलों में पढ़ने वालों ने जो अत्याचार, ज़ुल्म किया है क़यामत तक उसकी भरपाई नहीं हो सकती। अगर उनमें कभी सुख चैन दिखाई पड़े और वे तमीज़ से दिखें तो यह उनके लालच, ख़ुशामद की वजह से है। उनकी कहानी यह है कि जैसे कोई अपने दोस्तों से कहे कि मैंने बिल्ली को अच्छी तरह सधाया है और इसे वह तमीज़ सिखायी है कि अगर खाने में कई तरह की डिशें भी हों तो मैं उसके हाथ में मोमबत्ती दे देता हूँ जिसकी रौशनी में मेहमान खाना खाते हैं। दोस्त जवाब दे कि इस पर भी बिल्ली पर भरोसा नहीं किया जा सकता अगर आप मेरी दावत करें तो यह बात साबित कर दूँगा। उसने दोस्त की दावत कर दी। यह पहुँचे तो देखा कि बिल्ली चुने हुए खानों से बेपरवाह हाथ में मोमबत्ती लिए बैठी है। उसने चुपके से अपने जेब से चूहा निकाला और खाने की मेज़ पर

रख दिया। चूहे को देखते ही बिल्ली ने मोमबत्ती फेंक दी और चूहा पकड़ने के चक्कर में सब तितर–बितर हो गया। इससे मेहमानों और घर वालों को बड़ी कोफ़्त हुई।

यूरोप और अमरीका वालों की Training ऐसी ही होती है कि जब तक वह अपना खाना नहीं देखते वे तमीज़ तहज़ीब से रहते हैं मगर जैसे ही छोटे कमज़ोर मुल्कों के सोने, तेल और दूसरे खनिजों पर उनकी आँख पड़ती है तो वे दूसरों के हक़ हड़पने को हाथ से तमीज़ की मोमबत्ती फेंक देते हैं और फाड़ने वाले जानवरों (दरिन्दों) की तरह दौड़ पड़ते हैं और कमज़ोर देशों के माल पर और उनकी अध्यात्मिक सम्पदा पर हमला कर देते हैं, उसके लिए बेगुनाहों के ख़ून से अपने हाथ रंग लेते हैं। पच्छिम में बुराई, सेक्स, बदतमीज़ी, मारधाड़, लूट–खसोट, गन्दगी और गुनाहों की जड़ घर और घरेलू सिस्टम की ख़राबी है। अगर अमरीका और यूरोप के घरों में खुदा की याद होती और वहाँ तस्बीह की गूँज होती तो उनमें शरीफ, शिष्ट इन्सान निकलते। लेकिन पश्चिम वाले सच सच्चाई से दूर हैं। इसलिए नतीजे भी कड़वे हैं। सिस्टम ग़लत है, अपनाने के क़ाबिल नहीं। जो उनका अनुकरण करेगा, उनके रास्ते पर चलेगा वह उनसे भी ज़्यादा बुरा होगा।

(जारी)

बक़िया रोज़ा और आपसी भाईचारा

बन्दगी और इताअत करें उसके हर हुक्म पर चलें और कभी कोई ऐसा काम न करें जिसमें उसकी नाराज़गी और नाखुशी हो और वह उस काम को पसन्द न फरमाता हो न तो हम ऐसा काम ज़ाहिर बज़ाहिर करें और न छुप कर करें क्योंकि हमारा अल्लाह हमारे हर अमल को जानता है। वह हमारे दिलों के तमाम भेद जानता है। और उससे हम कोई बात भी नहीं छुपा सकते। इसलिए उसकी बन्दगी और उससे हमारी वफादारी सिर्फ उसी वक़्त साबित हो सकती है जबकि हम अपनी छुपी हुई और खुफिया बातों में भी उसकी खुशी का ख़याल रखें और उससे डरते रहें उस तरह जिस सूरत से हम अपनी ज़ाहिरी बातों में उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ न करें।

इस्लाम के लफ्ज़ के माने तो आप जानते ही होंगे और जो शख़्स नहीं जानता उसे याद रखना चाहिए कि इसके माने हैं फरमाँबरदारी, इताअत करना और हुक्म मानना इसलिए मुसलमान वही है जो अपने अल्लाह को मानने वाला हो और उससे वफादारी करे और उसका हुक्म माने। उसकी फरमाँबरदारी यह है कि मुसलमान अपने खुदा के हर हुक्म पर अमल करे और उससे वफ़ादारी यह है कि उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ किसी दूसरे का सहारा न तलाश करे और उस काम में किसी की भी बात न माने जिसमें ख़ुदा के हुक्म को न मानना और बग़ावत ज़ाहिर होती हो।

□□□